# प्राक्कथन

साहित्य समाज का दर्पण है समाज में घटने वाली घटना साहित्य में देखने को मिलती है जिससे हम कह सकते हैं कि साहित्य और समाज एक दूसरे पर अवलंबित है । हिंदी साहित्य के अंदर वर्तमान समय में कथा साहित्य सबसे प्रचलित एवं लोक प्रचलित रहा है क्योंकि साहित्य मानव जीवन का चित्रण करता है। इसमें मानव जीवन से संबंधित सारी बातें देखने को मिलती है। जिसके कारण हर पाठक को उसकी कथा उससे संबंधित लगती है । धीरे-धीरे साहित्य में भी नए-नए विषय आ रहे हैं जिससे कथा साहित्य और भी विशाल और प्रगाढ़ होता जा रहा है।

वर्तमान समय में कथा साहित्य में विविधता के लिए दलित कथाकार श्यौराज सिंह बेचैन प्रचलित है। अपने लोक से प्रेरित होकर विविध प्रकार की कथा बनाना उनका कार्य रहा है। अपनी सूझबूझ और अनुभवजन्य ज्ञान को लेकर वह आज बहुत चर्चित एवं सक्रिय रहे हैं। मैं श्यौराज सिंह बेचैन की आत्मकथा के बारे में बातें सुनी और पढ़ी जिसके कारण मैं उनसे प्रभावित हुआ । तभी मैंने पीएच.डी के शोध कार्य के लिए श्यौराज सिंह बेचैन जी को चुना। उनके साहित्य में शब्दों की गहरी पकड़ पाठक को कथा साहित्य में जकड़े रखने की कला कथा साहित्य  में आनेवाले नए मोड़ में आकर्षण का केंद्र रहा है। अपनी इसी विशिष्टता एवं कला के द्वारा लेखक  श्यौराज सिंह बेचैन वर्तमान समय में चर्चित रहे हैं। फेसबुक, ऑनलाइन चर्चा, टी.वी. कार्यक्रम के जरिए वो अपने पाठकों से जुड़े रहते हैं। वो सबसे बड़ी उनकी खासियत है। अपने इसी सरल स्वभाव एवं रचना की विशिष्टता को लेकर मैंने अपने शोध कार्य का विषय "श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी पात्रों का मूल्यांकन" रखा है।

इस शोध प्रबंध में मैंने दलित साहित्यकार श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में चित्रित समस्याओं को विविध भागों में विभाजित करने का प्रयास किया है। मैंने इस शोध कार्य को कुल सात अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्यायः नारी विमर्श की पीठिका।

द्वितीय अध्यायः श्यौराज सिंह बेचैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

तृतीय अध्यायः श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी।

चतुर्थ अध्यायः श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी संघर्ष।

पंचम अध्यायः श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी चेतना।

षष्ठ अध्यायः श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य की भाषा और शिल्प।

सप्तम अध्यायः उपसंहार।

प्रस्तुत शोध- प्रबंध का आलोच्य विषय "श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी पात्रों का मूल्यांकन" है। हिंदी साहित्य में श्यौराज सिंह बेचैन जी के नारी पात्रों का मूल्यांकन विषय पर कोई शोध प्रबंध उपलब्ध नहीं हैं। इस दृष्टि से श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी पात्रों का मूल्यांकन का विश्लेषण मेरी तरफ़ से पहला प्रयास हैं।

आलोच्य शोध-प्रबंध के साहित्य में नारी पात्रों में यथार्थ के विविध आयामों को रेखांकित किया गया है। भारतवर्ष के अनेक भूखण्ड़ों में रहने वाले दलित गैर-दलित समाज में नारी चेतना का विस्तार से यहाँ अध्ययन किया गया है। इस परिकल्पना से प्रभावित होकर इस प्रस्तावित शोध-प्रबंध में नारी की चेतना एवं मूल्यों को समझना और उसे चरितार्थ करने का प्रयत्न किया गया है हमारे लिए यही एक शोध-प्रबंध का महत्व एवं उपयोगिता रही है।

उपर्युक्त मुद्दों की चर्चा के उपरान्त अध्याय के अंत में समग्रावलोकन की प्रक्रिया द्वारा अध्यायगत निष्कर्ष को समाहित किया है एवं "संदर्भानुक्रम" को अध्यायों के अंत में ही प्रस्तुत किया गया है। उसमें सहायक ग्रन्थ या संदर्भ ग्रन्थ का नामोल्लेख, उनके लेखक तथा पृष्ठ-संख्या इत्यादि को विधिवत् रूप से प्रस्तुत किया गया है। संदर्भ-ग्रन्थ के स्थान पर यदि पत्र-पत्रिका हुए तो उनका भी विधिवत् उल्लेख किया गया है- महीना, वर्ष, पृष्ठ-संख्या, लेखक का नाम आदि के साथ और लगभग यही प्रविधि शोध-प्रबंध के अन्य अध्यायों में भी हमने प्रस्तुत की है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध सप्तम अध्यायों में विभाजित है **प्रथम अध्यायः- 'नारी विमर्श की पूर्व पीठिका'** है जिसके अंतर्गत श्यौराज सिंह जी के कथा-साहित्य में सामाजिक सद्भाव में व्यक्ति एवं समाज की पृष्ठभूमि को नियमित रूप से स्पष्ट करने का मैंने प्रयत्न किया है।

**शोध-प्रबंध के द्वितीय अध्याय "श्यौराज सिंह बेचैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व"** जिसके अंतर्गत पहले में इनके व्यक्तित्व को रखा है जिसमें श्यौराज सिंह जी की भूमिका, जन्म वर्ष एवं जन्म स्थल, पारिवारिक स्थिति, शिक्षा, कार्य क्षेत्र तथा उनकी आप बीती का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है और दूसरे में इनके कृतित्व को रखा है जिसमें श्यौराज सिंह बेचैन की रचनाएँ, पुरस्कार, इनकी रचनाओं का अन्य भाषा में अनुवाद, अन्य क्षेत्रों में इनके कार्य एवं इनकी पुरस्कृत रचनाओं आदि के विषय में विस्तृत रूप में चर्चा की गई है। किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने से पूर्व उसके खुद के विषय में जानना समझना भी जरूरी होता है। पंत जी ने कहा है कि-

"वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान।

उमड़कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान।।"

इसी आधार पर आपने अपने भावों या विचारों को पास-पड़ौस तथा जीवन में घटित घटनाओं से ही अपने पूर्ण सद्भावों को अपनी कृतियों में समाहित किया है। जिनका वर्णन हम पूर्व अध्याय में कर चुके हैं। श्यौराज सिंह बेचैन जी को इस अध्याय में समाहित किया गया है तथा प्रस्तुत अध्याय में हमने उन सब बिन्दुओं पर सोदाहरण विचार-विश्लेषण किया है।

**शोध-प्रबंध का तृतीय अध्याय 'श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी'** को समर्पित हुआ है। इस अध्याय में हमने स्त्री चरित्र पर केन्द्रित उपन्यासों, कहानी, कविता, आलोचनाओं पर एक विहंगम दृष्टि केन्द्रित करके स्त्री चरित्र को प्रस्तुत किया है। जिसके अंतर्गत पूर्व पे्रमचन्द युग की कृतियों तथा रचनाओं एवं प्रेमचंद युगीन रचनाओं पर हमने चर्चा की गई है। प्रेमचंद पूर्व एवं प्रेमचंद पश्चात् साहित्य में स्त्री चरित्र पर दृष्टि डालते हुए उस पर हमने निम्न बिन्दुओं के माध्यम से अपने शोध-प्रबंध में इसका वर्णन किया है। पूर्व प्रेमचंद युगीन साहित्य में नारी को बहुत ही सुंदर रूप प्रदान किया गया है। आधुनिक युग से पूर्व के साहित्य में व्याप्त नारी चरित्र को हमने इस अध्याय में पुष्टि तथ्यों के आधार पर वर्णन किया है।

**शोध-प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में "श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी संघर्ष"** पर विचार-विश्लेषण हुआ है। इस अध्याय में श्यौराज सिंह 'बेचैन' जी के कविता, कहानी, आत्मकथा, मीडिया, उपन्यास में नारी-संघर्ष शीर्षक के अंतर्गत अभिव्यक्त नारी

संघर्ष का हमने विस्तार से वर्णन किया है।

ऐसे ही समस्त रचनाओं में व्याप्त पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सम्प्रदायिक, सांस्कृतिक, भाषाई संघर्ष को इस अध्याय के रूप में वर्णित किया गया है।

**शोध-प्रबंध के पंचम अध्याय "श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य में नारी चेतना"** में श्यौराज सिंह जी की कविता, कहानियों, आत्मकथा, उपन्यास, आलोचनाओं, मीडिया में सामाजिक चेतना शीर्षक के अंतर्गत श्यौराज सिंह जी के साहित्यं में वर्णित नारी चेतना को व्यक्त किया है। आपके तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। तीनों में सामाजिक चेतना को दर्शाया गया है। पहला कहानी संग्रह 'भरोसे की बहन' 2012 ई. में प्रकाशित हुआ है। जिसमें कुल दस कहानियाँ हैं जो कि नारी चेतना से ओत-प्रोत हैं।

प्रथम संग्रह 'भरोसे की बहन में'लेखक ने सामाजिक लोकतंत्र की भावना और अवसरों की समानता की कामना उनकी सृजनशीलता में निहित रही है बहिष्कृत और वंचित भारत के डूबते सपनों की कथात्मक अभिव्यक्ति का कलात्मक रूप क्या और कैसा बना है यह तो पाठक ही तय करेंगे मैं क्या कहूं?

द्वितीय खण्ड 'मेरी प्रिय कहानियाँ'-2019 में प्रस्तुत संग्रह में कल नौ कहानियां हैं जिसमें संविधान सापेक्ष, सामाजिक दायित्व बोध की दिशा में रचनात्मक योगदान है क्योंकि मैं रचनाकार हूं । हर रचनाकार एक जननी की तरह होता है और उसे अपनी यानी सब संताने कमोवेश प्रिय होती है।

तृतीय संग्रह 'हाथे तो उग आते हैं-2020 उपर्युक्त विवेचना के आधार पर मैंने श्यौराज सिंह बेचैन जी की कहानियों में नारी चेतना का वर्णन करने हेतु उनकी कहानियों में व्याप्त पारिवारिक नारी, धार्मिक, संघर्ष, साम्प्रदायिक संघर्ष, सांस्कृतिक संघर्ष को इस अध्याय में विस्तृत रूप से विश्लेषित किया है।

**शोध प्रबंध के षष्ठम अध्याय में "श्यौराज सिंह बेचैन के साहित्य की भाषा और शिल्प"** है। इस अध्याय में बेचैन जी के साहित्य का जो केन्द्र बिन्दु रहा है उन सभी का वर्णन किया गया है। प्रत्येक भावों को अभिव्यक्त करने की अपनी एक विशेष शैली होती है। शैली से तात्पर्य अपनी बात को कहने का ढंग, शैली शब्दों का अंग्रेजी भाषा में

अर्थ है स्टाइल। शब्द के अन्य अर्थ रीति, काम करने का ढंग, तरीका नियम आदि। यहाँ लेखक की भाषा सौन्दर्य के रूप में जिन तत्वों का प्रयोग किया है। उसमें लोकोक्ति एवं मुहावरों का प्रयोग भी किया गया है। जिसमें साहित्य में सहजता आती है।

साहित्य में सभी आवश्यक तत्वों का प्रयोग करके रचनाओं की सजीवता को बढ़ाया है। जैसे-देश-विदेश, ग्रामीण शब्दों, तद्भव-तत्सम, बिम्ब, प्रतीक आदि का प्रयोग प्रसंगानुसार किया है। इन सभी का प्रयोग लेखक ने अपने साहित्य में बहुत ही सुन्दर रूप में किया है। जिसका वर्णन शोधार्थी ने अपने शोध प्रबंध में विस्तृत रूप  में वर्णन किया है।

शोध-प्रबंध के अंतिम सप्तम् अध्याय में 'उपसंहार' का स्थान निर्धारित किया गया है। उपसंहार गोपुच्छवत् निश्चित् रूप में होता है किन्तु संक्षिप्त होने के साथ-साथ शोध-प्रबंध का एक महत्वपूर्ण अंग भी होता है। एक विषय के स्वतंत्र ग्रन्थ में उपसंहार की भूमिका इतनी महत्वपूर्ण नहीं होती, पर शोध-प्रबंध में उपसंहार न हो तो उस शोध-प्रबंध ही नहीं माना जा सकता। उपसंहार में मैंने सम्पूर्ण शोध-प्रबंध के सार-संक्षेप को रखने के उपरान्त उसकी उपादेयता, उसके महत्वपूर्ण निष्कर्ष और भविष्य की संभावनाओं पर भी प्रकाश डालने का उपक्रम प्रस्तुत किया गया है।

मैंने महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के कोर्स वर्क एवं विभागीय कोर्स वर्क में कई नियमों एवं शोध-पद्धतियों को सीखा जिसका लाभ मुझे मेरे शोध-प्रबंध में प्राप्त हुआ। उसमें सीखी गई शोध-पद्धतियों एवं आधुनिक उपकरणों के साथ-साथ शोध गंगा भी मेरे शोध-प्रबंध के लिए बहुत सहायक सिद्ध हुई है। इन सब नियमों एवं अनुभवों का प्रयोग अथवा पालन करते हुए मैंने यह शोध-प्रबंध तैयार किया है ।

*****